व्याकरणवीथिः

कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण

0974

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

974 – व्याकरणवीथि:
कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण

ISBN 978-93-5007-774-0

प्रथम संस्करण
जुलाई 2003 आषाढ़ शक्संवत् 1925

संशोधित संस्करण
नवंबर 2016 कार्तिक शक्संवत् 1938

पुनर्मुद्रण
अप्रैल 2019 चैत्र शक्संवत् 1941
सितंबर 2019 भाद्रपद शक्संवत् 1941
जनवरी 2021 पौष शक्संवत् 1942
सितंबर 2022 आश्विन शक्संवत् 1944
मार्च 2024 चैत्र शक्संवत् 1946

PD 10T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2016

₹ 110.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा इंडिया ऑफ़सेट प्रिंटर्स प्रा. लि., बी–20/1 एवं एक्स-36, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-II, नयी दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेट
बेंगलुरु 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी.कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 **फ़ोन : 0361-2676869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *अमिताभ कुमार*
संपादक : *रेखा अग्रवाल*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

आवरण
अमित श्रीवास्तव

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत - शिक्षणार्थमादर्श - पाठ्यक्रम - पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद: भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां संस्कृतव्याकरणसम्बन्धिकाठिन्यमपाकर्तुं द्वादशाध्यायेषु प्राक्तनसामाजिक-विज्ञानमानविकीशिक्षाविभागेन निर्मितस्य व्याकरणवीथि: नामपुस्तकस्य संशोधितं परिवर्धितं च संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र वर्णविचारसंज्ञासन्धिशब्द-धातुरूपोपसर्गाव्ययप्रत्ययसमासरचनाप्रयोगानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। पुस्तकमिदं पठित्वा छात्रा: संस्कृतस्य प्रयोगे दक्षा: भवेयु:, इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहित:।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यै: विशेषज्ञै: अनुभविभि: संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोग: कृत:, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शा: सदैवास्माकं स्वागतार्हा:।

हृषिकेश सेनापति

नवदेहली *निदेशक:*

नवम्बर 2016 राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। प्रातिशाख्य तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में पदगत सन्धि, समास, आगम, लोप, वर्ण-विकार, प्रकृति तथा प्रत्ययों का विवेचन प्राप्त होता है। निरुक्तकार यास्क का योगदान इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा की गई नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात तथा क्रिया आदि की व्याख्या व्याकरण के परवर्ती आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) के लिए भी उपयोगी रही है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है। **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेन** इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्राचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है — **मुखं व्याकरणं स्मृतम्।** संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ बोध तथा वेद मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग छह हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो, निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि, वेदस्याहुर्मनीषिण:।।

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

© NCERT not to be republished

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करते हैं।

संस्कृत वाङ्मय (वैदिक एवं लौकिक) की रक्षा करना व्याकरण का प्रथम प्रयोजन है, जैसा कि महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है— "रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: प्रयोजनम्"।

व्याकरण ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों तथा पठित और अपठित वाङ्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असंदिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान्, बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है, क्योंकि वह जानता है कि अशुद्ध पद का प्रयोग अनिष्ट का कारण बन जाता है।

दुष्ट: शब्द: स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोऽपराधात्।।

(पाणिनीय शिक्षा)

व्याकरणशास्त्र के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए किसी ने ठीक ही कहा है—

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
स्वजन: श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के *महाभाष्य* में सङ्केत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था।

"बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच।"

© NCERT not to be republished

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है—
"ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्य: ऋषय: ब्राह्मणेभ्यश्च।"

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर सम्प्रदाय भी था जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने *अष्टाध्यायी* में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य, स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि का समय सप्तम ई.पू. और पञ्चम ई.पू. शताब्दी के मध्य माना जाता है। इस विषय में विद्वानों का मतैक्य नहीं है। ये उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित शालातुर ग्राम के निवासी थे। इनकी माता का नाम दाक्षी था।

सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिने: (वाक्यपदीय)

ये उपवर्ष या वर्ष आचार्य के शिष्य थे। ऐसा माना जाता है कि पाणिनि की तपस्या से प्रसन्न होकर महेश्वर ने उन्हें 14 माहेश्वर सूत्रों का उपदेश दिया। उन्हीं के आधार पर पाणिनि ने अत्यन्त संक्षिप्त (सूत्र) शैली में सुदृढ़ व्याकरण लिखा है। यह ग्रन्थ आठ अध्यायों में विभाजित है। अत: इसका नाम *अष्टाध्यायी* है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में सूत्र हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग 4000 सूत्र हैं। समस्त सूत्र अध्याय, पाद और सूत्राङ्कों में विभक्त हैं। प्रथम अध्याय में व्याकरण सम्बन्धी संज्ञाओं तथा परिभाषाओं का विवेचन है। द्वितीय अध्याय में समास और कारक के नियम हैं। तृतीय और अष्टम अध्याय में कृदन्त प्रकरण हैं। चतुर्थ तथा पञ्चम अध्याय में स्त्री प्रत्यय और तद्धित का विवेचन है। षष्ठ तथा सप्तम अध्याय में सन्धि, आदेश और स्वर-प्रक्रिया से

© NCERT not to be republished

सम्बन्धित सूत्र रखे गए हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि इनकी मृत्यु व्याघ्र (व्याघ्रो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिने: — पञ्चतन्त्र) के आक्रमण द्वारा त्रयोदशी तिथि को हुई थी।

द्वितीय वैयाकरण कात्यायन हैं, जिन्हें वररुचि भी कहा जाता है। इनका समय 400 ई.पू. से 300 ई.पू. के मध्य माना जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों की आलोचनात्मक व्याख्या की है, जो *वार्तिक* के नाम से प्रसिद्ध है। वार्तिकों की संख्या प्राय: 4000 है।

पाणिनि की व्याकरण परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण पतञ्जलि हैं। इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ *महाभाष्य* है। कात्यायन के वार्तिकों की प्रश्नोत्तर-शैली में समीक्षा करते हुए पतञ्जलि ने *अष्टाध्यायी* पर भाष्य लिखा है। *अष्टाध्यायी* के अध्याय, पाद और सूत्रक्रम में ही पतञ्जलि ने अपने भाष्य का क्रम रखा है। इसका विभाजन आह्निकों में है। प्रथम पस्पशाह्निक में व्याकरण की आवश्यकता आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण विवेचन है। वार्तिकों की समीक्षा तथा शङ्काओं के समाधान के साथ उपयोगी वार्तिकों को सहर्ष स्वीकार तथा अनुपयुक्त आलोचनाओं का खण्डन किया है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रचुर एवं मनोरम परिचय प्राप्त होता है। *महाभाष्य* पर कैय्यट की प्रदीप और नागेश की उद्योत टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। व्याकरणशास्त्र में पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि को **त्रिमुनि** (मुनित्रय) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

काशिका और न्यास

पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के पश्चात् व्याकरण नियमों को बोधगम्य बनाने के लिए विविध टीका-ग्रन्थों का युग प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में सातवीं ईसवी में जयादित्य और वामन ने *अष्टाध्यायी* पर एक टीका लिखी जो *काशिका वृत्ति* के नाम से प्रसिद्ध है। काशिका पर जिनेन्द्र बुद्धि ने *न्यास* और हरदत्त ने *पदमञ्जरी* नामक उपटीकाएँ लिखीं।

© NCERT not to be republished

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। धर्मकीर्ति ने *रूपावतार* ग्रन्थ लिखा जिसमें *अष्टाध्यायी* के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने *रूपमाला* और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने *प्रक्रिया कौमुदी* नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग भट्टोजी दीक्षित ने *सिद्धान्त कौमुदी* की रचना की। इस पर स्वयं भट्टोजी दीक्षित ने *प्रौढ़मनोरमा* नाम की टीका लिखी। इसी ग्रन्थ पर पण्डितराज जगन्नाथ ने *मनोरमा कुचमर्दिनी* नाम से व्याख्या प्रस्तुत की है। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने *लघुशब्देन्दुशेखर* नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएँ - *तत्त्वबोधिनी* और *बालमनोरमा* हैं। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए *लघुसिद्धान्त कौमुदी* एवं *मध्यसिद्धान्त कौमुदी* की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्राय: व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में— भर्तृहरि का *वाक्यपदीय,* कौण्डभट्ट का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट की *लघुमञ्जूषा* और *स्फोटवाद* प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पूर्व में प्रकाशित *व्याकरणवीथि:* पुस्तक का यह संशोधित संस्करण है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में 'वर्ण विचार', द्वितीय में 'संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण', तृतीय में 'सन्धि', चतुर्थ में 'शब्दरूप सामान्य परिचय' पंचम में 'धातुरूप सामान्य परिचय' षष्ठ में 'उपसर्ग', सप्तम में 'अव्यय', अष्टम में 'प्रत्यय', नवम में 'समास परिचय', दशम में 'कारक और विभक्ति' तथा एकादश अध्याय में 'वाच्य परिवर्तन' पर उपयोगी सामग्री दी गई है। इसके द्वादश अध्याय में 'रचना प्रयोग' (संस्कृत में

© NCERT not to be republished

पत्र, अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर, अनुच्छेद लेखन तथा लघु निबंध) दिए गए हैं। पुस्तक के 'परिशिष्ट' भाग में 'शब्दरूपाणि' (अजन्त, हलन्त, सर्वनाम तथा संख्यावाची शब्द) एवं 'धातुरूपाणि' गणों के अनुसार पर्याप्त मात्रा में दी गई है, जिससे छात्रों को शब्द रूप तथा धातु रूप सम्बन्धी समस्या के लिए इधर-उधर भटकना न पड़े। इस तरह इस पुस्तक में संस्कृत व्याकरण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों के व्याकरण ज्ञान को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक माध्यमिक स्तर के छात्रों की संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयों का समाधान करने में सफल होगी।

संपादक

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

आभा झा, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), सर्वोदय बाल उ.मा. विद्यालय, जे-ब्लाक, साकेत, नयी दिल्ली

पतञ्जलि कुमार भाटिया, *रीडर* (संस्कृत), पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नेहरू नगर, नयी दिल्ली

पुरुषोत्तम मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, भवन्स मेहता कॉलेज, भरवारी, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

योगेश्वर दत्त शर्मा, *रीडर* (संस्कृत), (अवकाश प्राप्त) हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राजेश्वर मिश्र, *रीडर*, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

रामनाथ झा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फ़ॉर संस्कृत स्टडीज़, जे.एन.यू, नयी दिल्ली

लता अरोरा, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर-IV, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली

हरिराम मिश्र, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), स्पेशल सेंटर फ़ॉर संस्कृत स्टडीज़, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय, भाषा शिक्षा विभाग

उर्मिल खुंगर, *सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर* (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), संस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर*, संस्कृत (समन्वयक एवं संपादक)

जतीन्द्र मोहन मिश्र, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, संस्कृत (सह संपादक)

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ–

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणिका

	पुरोवाक्	*iii*
	भूमिका	*v*
अध्याय		
प्रथम	**वर्ण विचार**	**1-8**
द्वितीय	**संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण**	**9-12**
तृतीय	**सन्धि**	**13-34**
	1. स्वर (अच्) सन्धि	13
	2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि	22
	3. विसर्ग सन्धि	28
चतुर्थ	**शब्दरूप सामान्य परिचय**	**35-40**
पंचम	**धातुरूप सामान्य परिचय**	**41-48**
षष्ठ	**उपसर्ग**	**49-53**
सप्तम	**अव्यय**	**54-60**
अष्टम	**प्रत्यय**	**61-100**
	1. कृत् प्रत्यय	61
	2. तद्धित प्रत्यय	89
	3. स्त्री प्रत्यय	98
नवम	**समास परिचय**	**101-109**
दशम	**कारक और विभक्ति**	**110-123**
एकादश	**वाच्य परिवर्तन**	**124-128**
द्वादश	**रचना प्रयोग**	**129-153**
	1. पत्रम्	129
	2. दूरभाषवार्ता	133
	3. अपठित गद्यांश	134

not to be republished © NCERT

4. अनुच्छेदलेखनम् 141
5. निबन्धावली 143

परिशिष्ट

I. शब्दरूपाणि **154-178**
i. स्वरान्त शब्दरूप 154
ii. व्यञ्जनान्त शब्दरूप 160
iii. सर्वनाम 165
iv. संख्यावाची शब्द 173

II. धातुरूपाणि **179-228**

© NCERT not to be republished